आलोचक रामविलास शर्मा की दृष्टि में 'निराला'

डॉ० बलबीर सिहँ*

एसोसिएट प्रोफेसर, सह–आचार्य,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, दयाल सिंह कॉलेज, करनाल (हरियाणा), भारत

***Email ID**: drbalbirsinghdsc@gmail.com*

Accepted: 23.08.2022 **Published**: 01.09.2022

मुख्य शब्दः आलोचक रामविलास शर्मा, निराला।

शोध आलेख सार

रामविलास शर्मा 'निराला' की साहित्य यात्रा के सच्चे और निष्पक्ष सहचर है। वे उनके दुःखी जीवन को देखकर भावुक नहीं होते बल्कि उनकी जिजीविषा के कायल हैं। भाषा, समाज और राष्ट्र के प्रति निराला की दृष्टि को रामविलास शर्मा ने अपनी समीक्षा में उतारा है तथा निराला के जीवन के अन्तरंग पहलुओं को निष्पक्षता के साथ प्रदर्शित किया है उनकी दृष्टि में निराला केवल एक व्यक्ति ऋषि और गद्यकार नहीं है, बल्कि एक सच्चे साहित्य साधक हैं, जिन्होंने न केवल अपनी साहित्य साधना से सरस्वती माँ के भण्डार को भरा है, बल्कि व्यक्ति के लिए भी जीवन की नई राह खोजी है। वस्तुतः रामविलास की निष्पक्ष, पारखी एवम् सौंदर्यपूर्ण दृष्टि ने निराला जैसे हाशिये पर पड़े कवि को एक बड़े साहित्य साधक के रूप में स्थापित किया है और निराला की यह स्थापना समालोचक रामविलास शर्मा की दृष्टि में अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं है, बल्कि सही समालोचना की उपज है।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

बहुमुखी प्रतिभा के धनी 'रामविलास शर्मा' स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के एक निष्पक्ष समालोचक, सफल कवि, विचारशील निबंधकार,उत्कृष्ट चिन्तक, सफल यात्रा–वृतांतकार कुषल संपादक, आदर्श शिक्षक और हिन्दी के वीर प्रहरी के रूप में विख्यात है, परन्तु इस हरफनमौला साहित्यकार की ख्याति उत्कृष्ट एवम् पारखी समालोचक के रूप में अधिक है। एक आलोचक की दृष्टि भावावेश और भावुकता से परे होती है । आलोचक के रूप में रामविलास शर्मा ने अनेक साहित्यकारों के साहित्य का तटस्थ भाव से मूल्यांकन किया, परन्तु वे 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' के व्यक्तित्व एवम् कृतित्व से अधिक प्रभावित

दिखाई देते हैं। महाप्राण निराला छायावाद के 'शिव' माने जाते हैं। अक्कड़ और फक्कड़ प्रवृत्ति के निराला अनुभूतियों और कलाओं से रंगीन है जिसमें हजार रंग है। कहीं अत्यधिक चमकीले पीले और कही गहरे काले दिखाई पड़ते हैं । समीक्षक रामविलास शर्मा की दृष्टि से निराला के सभी रंग उभरे हैं तथा इस दृष्टि में किसी प्रकार की भावुकता और पक्षता नहीं दिखती बल्कि गंभीरता और तटस्थता के साक्षात दर्शन होते हैं। निराला का जन्म 'भूख' से त्रस्त बंगाली भूमि पर हुआ। रामविलास शर्मा जी निराला के जन्म पर लिखते हैं– 'भरे–पूरे परिवार में निराला जी का जन्म हुआ था । माता थी, पिता थे, चाचा थे, सभी कुछ था। अवध में अपना गाँव छोड़कर यह परिवार बंगाल की एक रियासत में जा बसा था। हिन्दुस्तान की दूसरी रियासतों की तरह बंगाल की शस्य श्यामला भूमि पर महिषादल का भी एक राज्य था। वन, प्रकृति, आम, नारियल, कटहल, बाँस का पेड़, तालाब, नदियाँ, बेला, जुडी, हरसिंगार, सब कुछ था, लेकिन जनता भूखी थी। यहीं पर संवत् 1953 की वसंत पंचमी को पंड़ित राम सहाय त्रिपाठी के घर बालक सूर्यकुमार का जन्म हुआ।[1] निराला अभाव, गरीबो और भूखमरी से त्रस्त बचपन से त्रस्त थे ।

बालक सूर्यकुमार की तीन बरस बाद ही माँ की मृत्यु हो गई थी, माँ के प्रेम के बिना सूर्यकुमार कुछ ठोस और जिद्दी हो गए थे। पिता की उपेक्षा और मार पिटाई ने उसे और विद्रोही बना दिया था। वेश्या के लड़कों के हाथों पानी पीने के कारण पिता जी ने निराला की खूब ठुकाई की। निराला के साथ वार्तालाप का वर्णन करते हुए रामविलास शर्मा के अनुसार निराला बताते हैं– 'मारते वक्त पिता जी इतने तन्मय हो जाते थे कि उन्हें भूल जाता था कि दो विवाह के बाद पाये हुए इकलौते पुत्र को मार रहे हैं। मैं भी स्वभाव न बदल पाने के कारण मार खाने का आदी हो गया था।[2] रामविलास जी निराला के बाल्यकाल के बारे में बताते हैं कि 'सम्पूर्ण बाल्यकाल महिषादल में नहीं बीता था। जब तक वह अपने गाँव आया करता था कानपुर – रायबरेली लाइन पर बीघापुर स्टेशन से लगभग दो कोस पर गढ़कोला गाँव बसा हुआ है। लोन नदी पार करने पर गाँव के कच्चे घर दिखाई पड़े लगते है और घरों की तरह चौपाल, छप्पर, दहलीज, आँगन, खमसार और अटारी के नक्शे पर पण्डित राम सहाय का मकान भी बना हुआ है। अवध का यह भाग वैस ठाकुरों की बस्ती के कारण 'बैसवाड़ा' कहलाता है।[3]

निराला जिस परिवेष में पले–बढ़े उस परिवेश की आर्थिक स्थिति का वर्णन रामविलास शर्मा बिना किस जाति–भेद ऊपर उठकर करते हैं। वे जिस वर्ग और जाति में जन्मे हैं उसके अहं को भी बेबाकी और सत्यता के साथ अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं 'यहाँ के किसान परिश्रमी, ताल्लुकदार सरकारी पिट्ठू, छोटे जमींदार कमर टूटने पर भी निरंकुशता की परम्परा को निबाहते जाने वाले विप्र वर्ग दंभी और निम्न जातियाँ बहुत ही सताई हुई है'[4] निराला के बहाने रामविलास शर्मा का यह चित्रण तत्कालीन परिवेश में अगड़ी और पिछड़ी जातियों में वर्ग संघर्ष को रेखांकित करता है।

निराला की साहित्य लेखन की सुखद यादों की रामविलास शर्मा बहुत ही सुन्दर अभिव्यक्ति करते हैं– 'सन् 1923 में बाबू महादेव प्रसाद सेठ ने 'मतवाला' निकाला। सालभर निराला

जी वहाँ रहे । 'मतवाला' के प्रथम अंक में रक्षाबंधन पर कविता छपी और इसी के साथ 'मतवाला' के सम पर गढ़ा हुआ 'निराला' नाम भी प्रकाशित हुआ। अठारहवें अंक में 'जूही की कली' छपी, जिसके साथ पहली बार कवि का पूरा नाम पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' प्रकाशित हुआ है। उनके जीवन में बहुत दिनों के बाद ऐसा सुखद वर्ष आया था ?[5]

निराला का साहित्यिक जीवन बहुत ही संघर्षपूर्ण एवम् दुःखमय रहा। रामविलास शर्मा जी निराला के संघर्षपूर्ण और दुःखमय जीवन से अनुभूत है। ज्यों–ज्यों निराला की कविता परवान चढ़ रही थी उनका स्वास्थ्य उनका साथ नहीं दे रहा था। बीमारी की लड़ाई निराला न गढ़कोला के कच्चे मकान में ही लड़ी थी। कलकता प्रयास के समय उन्होंने जो कुछ कमाया उसमें से कुछ बचाकर भतीजों को भेजा रामविलास शर्मा एक जिक्र सुनाते है 'सन 29 में एक पत्र में उन्होंने बाग बेचने का जिक्र किया है और लिखा है खर्च की तकलीफ हो तो बर्तन बेच डालना। तकलीफ न सहना। 'शायद इन्हीं सब बातों को सोचकर 'सरोज स्मृति' में उन्होंने लिखा था–

'दुःख ही जीवन की कथा रही।'
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।'

निराला ने अपने जीवन का अधिक समय 'दारागंज' प्रयाग में बिताया। निराला की दिनचर्या के संदर्भ में शर्मा चित्र शैली में लिखते हैं– दारागंज प्रयाग में उन्होंने एक छोटा–सा मकान लिया जिसके एक भाग में उसके मकान मालिक भी रहते थे। इसकी छत इतनी नीची थी कि आदमी उसे हाथ उठाकर छू सकता था। निराला जी के लिए यह मकान कठघरे जैसा था। इसी में 'चोटी की पकड' 'काले कारनामे' 'नये पते', 'बेला' आदि पुस्तकें उन्होंने लिखी। प्रातः काल गंगा नहाते थे और स्वयं भोजन पकाते थे वर्तन धोना, घर साफ करना उनका अपना काम था। बहुत से आलोचकों ने निराला पर आरोप लगाया कि वे खर्चालू किस्म के व्यक्ति थे और यह धारण बना दी कि निराला जी को जो कुछ भी मिलता है, वे सब खा–पी डालते हैं और रामविलास शर्मा की दृष्टि में 'सत्य यह है कि अधिकांश वे दान कर देते हैं।'[6] आलोचनाओं से जलते अन्तर्मन ने निराला के भीतर को तपा दिया था और वे कुंदन बन रहे थे। सफल समीक्षक रामदास की दृष्टि की जलन का संबंध उस परिवेश है जो उनके साहित्य का तिरस्कार करता है। इसकी सामाजिक स्थिति पर हँसता है। दुःख और अपमान की ज्वालाएँ इसी से टकरा के मन–मरूस्थल को दग्ध करती है। उन ज्वालाओं को पीकर उसी परिवेश से जूझने के लिए वह शक्ति संचय करते हैं। अकसर वह इस परिवेश को 'अणिमा' में कारागार के रूप में चित्रित करते हैं –

गहन है यह अन्धकार कारा।
स्वार्थ के अवगुंठनों से हुआ है लुंठन हमारा।[7]

रामविलास शर्मा का मानना है कि निराला का बाहर और भीतर एकाकीपन से ग्रस्त है 'प्रत्येक स्थिति में एक बात स्पष्ट है कि निराला अपने परिवेश में स्वयं को अकेला पाते हैं । वह बंदीगृह में तो अकेले हैं, उससे बाहर है तो अकेले हैं। 'बेला' में निराला कहते भी हैं –

बाहर मैं कर दिया गया हूँ
भीतर पर, भर दिया गया हूँ

और 'अणिमा' मेंः–

मैं अकेलाः

देखता हूँ आ रही

मेरे दिवस की सान्धय बेला

निराला के संघर्ष और दुःख ही उन्हें निडर एवम् निर्भय बनाते हैं। वे संघर्ष से घबराते नहीं हैं और दुःख से डरते नहीं, उन्हें मृत्यु डरा नहीं सकती। वे चिरंजीवी बनना चाहते हैं। वे निराशा में आशावादी बने रहते हैं। वे मरकर भी नव जीवन की कामना करते हैं–

मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण

इसमें कहाँ मृत्यु

हैं जीवन ही जीवन

रामविलास शर्मा कहते हैं – 'निराला ने मृत्यु पर बहुत लिखा है और आरम्भ से ही लिखा है। कहीं मृत्यु का भय है यह भय कि दुनिया में कुछ किये बिना ही चल देना पड़े। उस भय के साथ यह आशा है कि अभी मृत्यु न आएगी यह तो जीवन का आरम्भ है। निराला की साहित्यिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में राम विलास शर्मा की दृष्टि केवल कवि के लिए प्रशसनीय नहीं है बल्कि गंभीर और निष्पक्ष है। निराला भारतीय साहित्य क्रांति चेतना और विद्रोह के कवि माने जाते हैं। ये तीनों स्वर पूँजिपतियों तथा शोषकों द्वारा की जा रही बदसलूकी और शोषण की प्रतिक्रिया है बड़े जमींदार और पूंजीपति किसान और मजदूर का शोषण कर रहे हैं परन्तु निराला क्रांतिकारियों को पुकारते हैं। राम विलास शर्मा के शब्दों में 'क्रांति की सार्थकता किसानों की मुक्ति में है अंग्रेजी राज और जमींदारी शासन के दोहरे उत्पीड़न से जो किसान को मुक्त करे, वही सच्चा क्रांतिकारी है निराला ने 'बादल–राग' (1924) में किसान और विप्लव वीर के संबंध पर लिखा था।[8]

जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर,

तुझे बुलाता कृषक अधीर

ऐ विप्लव के वीर।

जातिवाद, जात–पात, ऊँच–नीच और छुआ–छूत भारतीय समाज की एक असभ्य एवं लज्जात्मक विशेषता है। रामविलास का मानना है– 'जाति–पाँति का भेदभाव भारतीय समाज में आसमान से नहीं टपक पड़ा। वह सामन्ती व्यवस्था के साथ उत्पन्न होता है। उसके खात्मे से ही उसके खत्म होने की बारी आती है 'निराला ने इस व्यवस्था के खोखलेपन, वर्तमान 'युग में उसकी निःसारता, इस व्यवस्था के कारण निर्धन ब्राह्मणों में फैले हुए मिथ्या अहंकार और दंभ का चित्रण किया और इस व्यवस्था की कड़ी आलोचना की'[9] 'मिक्षुक' जैसी कविताओं में समाज की क्रुरतम झाँकी प्रस्तुत की गई।

नारी की स्वाधीनता को निराला शूद्रों की सामाजिक स्थिति के साथ जोड़कर देखते हैं। रामविलास शर्मा की दृष्टि में 'समाज में ऊँच–नीच का भेद मिटाना निराला के लिए एक राजनीतिक कर्तव्य था उसी तरह नारी के समान अधिकारों का संघर्ष स्वाधीनता आन्दोलन का अभिन्न अंग था। पुरुष बाहर अंग्रेजों का दास था और घर में उस दास पुरुष की दासी नारी थी। इस दोहरी परतंत्रता को खत्म किए बिना राष्ट्र स्वाधीन कैसे हो सकता है। निराला ने अपने निबंध संग्रह 'प्रबंध प्रतिमा' में लिखा है– 'हम लोग स्वयं जिस तरह गुलाम हैं, उसी तरह अपनी स्त्रियों को भी गुलाम बना रखा है, बल्कि उन्हें दासों की दासियों कर

रखा है। इस दैत्य से उन्हें शीघ्र मुक्ति देनी चाहिये तभी हमारी दासता की बेड़ियाँ कट सकती है।[10]

रामविलास शर्मा मानते हैं कि 'निराला की बड़ी इच्छा थी कि फिल्म निर्माण केन्द्र हिन्दी प्रदेश में भी हो। बम्बई और बंगाल को जो करोड़ों रुपया जाता है, वह बचता और इस प्रदेश की उन्नति में लगाया जाता। एक फिल्म कम्पनी चलाने की योजना भी बनी थी। निराला न उस प्रसंग में लिखा था, हिन्दी के नए कलाकार प्लाट और कथोपकथन द्वारा इस टाकी साहित्य को चमका सकते हैं।'[11]

रामविलास शर्मा 'निराला' के गांधीवाद के प्रति दृष्टिकोण को रेखांकित करते हुए कहते हैं अपने लेखन काल के आरम्भ में ही उन्होंने गांधीवाद के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया था। वह उन बहुत थोड़े से सर्तक बुद्धिजीवियों में थे जो न गाँधी के प्रति मोहाविष्ट थे, न उनके अंध विरोधी 'चरखा' निबंध में उन्होंने गांधी और रविन्द्रनाथ के बारे में लिखा था 'मेरी दृष्टि में जहर दोनों में है और अमृत भी दोनों में है। मुझे समय नहीं मिला कि समालोचना में गाँधी जी का जहर भी निकाल कर जनता के सामने रखता (प्रबंध प्रतिमा पृ. –18) इस कथन से उनके दृष्टिकोण की प्रगतिशीलता प्रामाणित होती है।'

निराला का प्रकृति स्नेह जग जाहिर है। वे प्रकृति में ब्रह्म देखते हैं। रामविलास शर्मा के शब्दों में 'जब–जब निराला प्रकृति को ब्रह्म के साथ याद करते हैं 'तुम और मैं' कविता में सच्चिदानंद ब्रह्म के साथ प्रकृति का गुण कीर्तन है। अन्यत्र जो प्रकृति जगत् की पलकों पर आसीन है, वह प्रिय के ध्यान में लीन है। प्रकृति में मातृत्व हैं, प्रेयसीत्व है। उसमें जीवन है, मृत्यु भी है। प्रकाश के साथ अंधकार है।[12]

खोलो दृगों के द्वय द्वार
मृत्यु जीवन ज्ञान–तम के
करण, कारण पार

रामविलास शर्मा की नजर में निराला का भावबोध जितना सुमुधर, समाज सापेक्ष और परिस्थितिजन्य है उनका कला पक्ष उतना ही रंगीन है। वे लिखते हैं– 'निराला प्रसंग बदलकर निर्जीव से लगने वाले शब्दों को नई शक्ति दे सकते हैं, यही उनकी कला की विशेषता है।[13] 'राम की शक्ति पूजा' कविता में शब्द दोहन की शक्ति का परिचय मिलता है। रामविलास शर्मा 'राम की शक्ति पूजा' और 'सरोज स्मृति' की भाषा के संदर्भ कहते हैं। एक निरर्थक–सा शब्द है– टलमल

रूप राशि में टलमल–टलमल (गीतिका)

यह छायावादी ढंग का प्रयोग है किन्तु 'सरोज–स्मृति' में निराला ने इसका प्रयोग उदात स्वर में किया है –

उमड़ता उर्ध्व को कल सलील।
जल टलमल करता नील–नील ।।

यहाँ फिर भी 'टलमल' का संबंध सौंदर्य से है 'राम की शक्ति पूजा में निराला ने इस शब्द का प्रयोग भव्य परिस्थिति के चित्रण में किया है लौट युगदल ! राक्षस पदतल पृथिवी टलमल ।

निराला के अनेक प्रिय शब्द हैं जिनका प्रयोग वे एक से अधिक बार करते हैं। निराला की शब्द योजना में तत्सम, तद्भव और देशज शब्दों की भरमार है। कहीं भाषा की उदातता है, तो कहीं भाषा का गंवारपन।

रामविलास शर्मा मानते हैं– तत्सम शब्दों के सफल–असफल प्रयोग में शब्द योजना के साथ निराला की भाव शक्ति, यथार्थ बीच चित्रण क्षमता आदि पर भी ध्यान देना होगा'[14] वस्तुतः रामविलास शर्मा कला पक्ष के सन्दर्भ में निराला की तुलना 'सेक्सपीयर' से करते हैं।[15]

निष्कर्षः सार रूप में कहा जा सकता है कि रामविलास शर्मा 'निराला' की साहित्य यात्रा के सच्चे और निष्पक्ष सहचर है। वे उनके दुःखी जीवन को देखकर भावुक नहीं होते बल्कि उनकी जिजीविषा के कायल हैं। भाषा, समाज और राष्ट्र के प्रति निराला की दृष्टि को रामविलास शर्मा ने अपनी समीक्षा में उतारा है तथा निराला के जीवन के अन्तरंग पहलुओं को निष्पक्षता के साथ प्रदर्शित किया है उनकी दृष्टि में निराला केवल एक व्यक्ति ऋषि और गद्यकार नहीं है, बल्कि एक सच्चे साहित्य साधक हैं, जिन्होंने न केवल अपनी साहित्य साधना से सरस्वती माँ के भण्डार को भरा है, बल्कि व्यक्ति के लिए भी जीवन की नई राह खोजी है। वस्तुतः रामविलास की निष्पक्ष, पारखी एवम् सौंदर्यपूर्ण दृष्टि ने निराला जैसे हाशिये पर पड़े कवि को एक बड़े साहित्य साधक के रूप में स्थापित किया है और निराला की यह स्थापना समालोचक रामविलास शर्मा की दृष्टि में अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं है, बल्कि सही समालोचना की उपज है।

संदर्भ सूची

1. निराला : रामविलास शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, तृतीय संस्करण–1971, पृ.01.
2. निराला : रामविलास शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, तृतीय संस्करण 1971, पृ.03.
3. निराला : रामविलास शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, तृतीय संस्करण– 1971, पृ.04.
4. निराला : रामविलास शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, तृतीय संस्करण – 1971, पृ. 06.
5. निराला : रामविलास शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, तृतीय संस्करण 1971, पृ.–08
6. निराला : रामविलास शर्मा, शिवाला एण्ड कम्पनी तृतीय संस्करण–1971, पृ.13
7. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण– 1972, नई दिल्ली, पृ.253.
8. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन,प्रथम संस्करण 1972, नई दिल्ली, पृ. 22.
9. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1972, नई दिल्ली, पृ. 22.
10. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1972, नई दिल्ली, पृ. 35.
11. सुधा (पत्रिका), जून, 1934.
12. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण–1972, नई दिल्ली, पृ.72. 9.–72.

13. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1972, नई दिल्ली, पृ. 281
14. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1972, नई दिल्ली, पृ. 386
15. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण –1972, नई दिल्ली, पृ.–528